स्थानाङ्गसूत्र भा. २ दूसरेकी

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
	तीसरे स्थानका दूसरा उद्देशा	
१	दूसरे उद्देशेका विषय विवरण	१
२	लोकके स्वरूपका निरूपण	२–५
३	चमरादिकोंकी परिषद्का निरूपण	६–९
४	धर्म विशेषकी प्रतिपत्तिका निरूपण	१०–१४
५	बोधिशब्दसे अभिधेय धर्मादिका निरूपण	१५–१६
६	भेदसहित प्रव्रज्याका निरूपण	१७-२२
७	व्रतारोपणके कालका निरूपण	२३–२६
८	पुरुषके भेदोंका निरूपण	२७–३९
९	संसारी जीवोंकी प्ररूपणा पूर्वक सर्वजीवका निरूपण	४०–४३
१०	दिशाओंका और दिशाओंके आश्रित होनेसे गत्यागतिका निरूपण	४४–५३
११	त्रसजीवोंका और उनसे विपरीत स्थावर जीवोंके स्वरूपका निरूपण	५४–५५
१२	जीवपदार्थका निरूपण	५६–५७
१३	दुःखके स्वरूपका निरूपण	५८–६२
१४	परमतका निराकरण पूर्वक स्वमतका निरूपण	६३–७१
	तीसरा उद्देशा	
१५	कषायवाले जीवोंकी मायाका निरूपण	७२-७७
१६	आलोचना आदि करनेवालेका निरूपण	७८–८१
१७	शुद्धिकरनेवालोंकी आभ्यन्तर और बाह्य संपत्तिका निरूपण	८२–८३
१८	वस्त्रग्रहण के कारणोंका निरूपण	८४

१९	निग्रन्थोंका निरूपण	८५–१००
२०	वचन, मन का और उनके निषेधका निरूपण	१०१–१०३
२१	वृष्टिकायका निरूपण	१०४–१०७
२२	अधुनोपपन्नदेवोंका निरूपण	१०८–१२२
२३	देवोंके व्यापारोंका निरूपण	१२३–१२९
२४	देवोंके विमानका निरूपण	१३०–१३४
२५	जीवकी गतिका निरूपण	१३५–१३८
२६	निर्ग्रन्थ अनगारोंके आचारका निरूपण	१३९–१५६
२७	कर्मभूमिका निरूपण	१५७
२८	कर्मभूमिमें रहे हुवे मनुष्यों के धर्मका निरूपण	१५८–१६५
२९	नरकावासका निरूपण	१६६–१७३
३०	मिथ्यात्वका निरूपण	१७४–१८०
३१	धर्मके स्वरूपका निरूपण	१८१–१९१
३२	अर्थादि विनिश्चयके कारणोंकी परम्पराका निरूपण	१९२–१९७

चौथा उद्देशा

३३	अनगारकी कल्पविधिका निरूपण	१९८–२०२
३४	काल और वचनकी प्ररूपणा	२०३–२०७
३५	पर्यायान्तरका निरूपण	२०८–२१६
३६	मनुष्यक्षेत्र स्वरूपनिरूपणम्	२१७–२२१
३७	सामान्य पृथिवी देशका निरूपण	२२२–२२८
३८	किल्विषिक देवका निरूपण	२२९–२३१
३९	इन्द्रकी परिषद्का निरूपण	२३२–२३२
४०	प्रायश्चित्तवालोंका निरूपण	२३३–२४१
४१	योग्य व्यक्तियोंको प्रव्रज्यादानका निरूपण	२४२–२५३
४२	याचनादि विषयमें योग्यायोग्यका निरूपण	२५४–२५८
४३	प्रज्ञापनीय वस्तुका निरूपण	२५९–२६५
४४	कल्पस्थितिका निरूपण	२६६–२७४
४५	नारकादिकोंके शरीरका निरूपण	२७५–२७६

४६	प्रत्यनीक स्वरूपका निरूपण	२७७–२८२
४७	मातापिताके अङ्गके विभागका निरूपण	२८३–२८४
४८	श्रामण्यपर्याय को प्राप्त हुवा जीव जिनजिन कारणोंसे विशिष्ट निर्जरा करता है उन उन कारणोंका निरूपण	२८५–२८९
४९	पुद्गलोंके परिणाम बिशेषका निरूपण	२९०–२९७
५०	भेद सहित ऋद्धिके स्वरूपका निरूपण	२९८–३०५
५१	गौरवादि भेदोंका निरूपण	३०६–३११
५२	निवृत्तिके भेदोंका निरूपण	३१२–३२०
५३	लेश्याओंका निरूपण	३२१–३२५
५४	मरणका निरूपण	३२६–३३१
५५	मरणके अनन्तर हिताहितके स्वरूपका निरूपण	३३२–३३८
५६	पृथिवीके स्वरूपका निरूपण	३३९–३४२
५७	नारकोंकी उत्पत्तिका निरूपण	३४३–३४९
५८	तीर्थंकरके विमानोंका वर्णन	३४९–३५१
५९	कर्मके तीन स्थानोंका निरूपण	३५२–३५४
६०	पुद्गल स्कंधका निरूपण	३५५–३५६

चौथे स्थानकके पहला उद्देशक

६१	मङ्गलाचरण	३५७
६२	अन्तक्रियाका निरूपण	३५८–३६९
६३	वृक्षदृष्टान्तसे पुरुषोंका निरूपण	३७०–३९१
६४	प्रतिमाप्रतिपन्न पुरुषके कल्पनीय भाषादिका निरूपण	३९२–३९४
६५	वस्त्रदृष्टान्तसे पुरुषादिका निरूपण	३९५–४०२
६६	सुतादि दृष्टान्तसे पुरुषादिका निरूपण	४०३–४१२
६७	धुण दृष्टान्तसे पुरुषादिका निरूपण	४१३–४१९
६८	वनस्पतिका निरूपण	४२०–४२७
६९	ध्यानके स्वरूपका निरूपण	४२८–४५९
७०	भेद सहित देवोंकी स्थितिका निरूपण	४६०–४६२

७१	मोहके विषयभूत कषायोंका भेद सहित निरूपण	४६३–४७६
७२	कालत्रयवर्ती कषायोंका निरूपण	४७७–४८४
७३	प्रतिमाके स्वरूपका निरूपण	४८५–४८७
७४	जीवास्तिकायके विपरीत अजीवास्तिकायका भेद सहित निरूपण	४८८–४८९
७५	फलके दृष्टान्तसे पुरुषादिका निरूपण	४९०–४९३
७६	सत्यासत्य निमित्तक प्रणिधानके स्वरूपका निरूपण	४९४–५००
७७	पुरुषके स्वरूपका निरूपण	५०१–५१४
७८	लोकपालादिकोंके स्वरूपका निरूपण	५१५–५२६
७९	प्रमाणके स्वरूपका निरूपण	५२७–५३०
८०	दिक्कुमारि महत्तरिकाओंका निरूपण	५३१–५३४
८१	भेदसहित दृष्टिवादका निरूपण	५३५–५३६
८२	प्रायश्चित्तका निरूपण	५३७–५४१
८३	कालके स्वरूपका निरूपण	५४२–५४४
८४	पुद्गलोंके परिमाणका निरूपण	५४५–५४६
८५	जीवद्रव्यके परिणामोंका निरूपण	५४७–५५०
८६	दुर्गति–सुगतिरूप परिणामों के एवं दुर्गत–सुगतों के भेदोंका निरूपण	५५१–५५५
८७	क्षयके परिणामों के क्रमका निरूपण	५५६–५५७
८८	हास्यके कारणोंका निरूपण	५५८
८९	दृष्टान्त दार्ष्टान्तिक पूर्वक अन्तरसूत्रका निरूपण	५५९–५६१
९०	भेदसहित भृतकका निरूपण	५६२–५६५
९१	देवत्वका निरूपण	५६६–५७३
९२	विकृतिके स्वरूपका निरूपण	५७४
९३	दृष्टान्त और दार्ष्टान्तिक सहित कूटागार आदिका निरूपण	५७५–५७७
९४	दार्ष्टान्तिक स्त्री सूत्रका निरूपण	५७८–५७९
९५	प्रज्ञप्तिका निरूपण	५८०–५८१

चौथे स्थानका दूसरा उद्देशा

९६	प्रतिसंलीन और अप्रतिसंलीनका निरूपण	५८२–५८५
९७	दीनके स्वरूपका निरूपण	५८६–५९२
९८	आर्यादि पुरुषके स्वरूपका निरूपण	५९३–५९५
९९	वृषभके दृष्टान्तसे पुरुषके स्वरूपका निरूपण	५९६–६०१
१००	हाथीके दृष्टान्तसे पुरुषके प्रकारका निरूपण	६०२–६११
१०१	विकथाके स्वरूपका निरूपण	६१२–६२९
१०२	कायविशेषका निरूपण	६३०–६३४
१०३	व्याघातके स्वरूपका निरूपण	६३५–६४०
१०४	स्वाध्यायमें कर्तव्यता–अकर्तव्यताका निरूपण	६४१–६४४
१०५	स्वाध्यायमें प्रवृत्त हुवेको लोकस्थितिका निरूपण	६४५–६४६
१०६	त्रसप्राण विशेषके स्वरूपका निरूपण	६४७–६५२
१०७	गर्हाके स्वरूपका निरूपण	६५३–६५६
१०८	दोषत्यागी जीवके स्वरूपका निरूपण	६५७–६६८
१०९	कारण उपस्थित होने पर साधुको अथवा साध्वी-जीको परस्परमें आलापकादिमें आराधकत्वका निरूपण	६६९–६७०
११०	तमस्कायके स्वरूपका निरूपण	६७१–६७५
१११	सेनाके दृष्टान्त द्वारा पुरुषोंके प्रकारका निरूपण	६७६–६८१
११२	पर्वत–राज्य आदिके दृष्टान्तसे कषायके स्वरूपका और उनको जीतनेके प्रकारका निरूपण	६८२–६९७
११३	संसारके स्वरूपका निरूपण	६९८–७००
११४	आहारके स्वरूपका निरूपण	७०१–७०२
११५	कर्मबन्धके स्वरूपका निरूपण	७०३–७२३
११६	एक–कति और सर्व शब्दकी प्ररूपणा	७२४–७३०
११७	मानुषोत्तर पर्वत के कूटोंका निरूपण	७३१–७३२
११८	जम्बूद्वीपगत भरत और ऐरवत पर्वतके कालका निरूपण	७३३–७४६

११९	जम्बूद्वीपके द्वारोंका निरूपण	७४७–७४८
१२०	जम्बूद्वीपस्थ अन्तरद्वीपोंका निरूपण	७४९–७५८
१२१	जम्बूद्वीपस्थ लवणसमुद्रकी अवगाहना आदि का निरूपण	७५९–७७१
१२२	धातकीखंड द्वीपके वलयप्रमाण आदिका निरूपण	७७२
१२३	नन्दीश्वरद्वीपका वर्णन	७७३–७८५
१२४	अञ्जनक पर्वतका वर्णन	७८६–७९१
१२५	रतिकर पर्वतका वर्णन	७९२–७९६
१२६	सत्यके स्वरूपका निरूपण	७९७–७९८
१२७	संयमके स्वरूपका निरूपण	७९९–
१२८	अकिञ्चनके स्वरूपका निरूपण	८००–८०१

समाप्त